चंद्र गहना से लौटती बेर

शब्दार्थ, भावार्थ एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

①

देख आया चंद्र गहना।
देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर

छोटे गुलाबी फूल का,

सज कर खड़ा है। (पृष्ठ 119)

शब्दार्थ—मेड़—खेतों के बीच आने-जाने का रास्ता। **बीता**—बालिस्त, लगभग 22.5 सेंटीमीटर (अंगूठे के सिरे से कनिष्ठा तक की लंबाई)। **ठिगना**—छोटे कद वाला। **मुरैठा**—साफा, पगड़ी। **शीश**—सिर।

भावार्थ—कवि चंद्र गहना से लौटते समय प्राकृतिक सौंदर्य निहारने के लिए खेत की मेड़ पर बैठ जाता है। वह आसपास की फसलों का सौंदर्य देखने लगता है। वह देखता है कि एक बीते (बिते) की लंबाई का ठिगना-सा चने का पौधा सज-धजकर खड़ा है। उसने अपने शीश पर साफा बाँध रखा है। मानो वह शादी में जाने को तैयार है, क्योंकि वह सिर पर गुलाबी फूल सजाए खड़ा है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) कवि और कविता का नाम लिखिए। 1

(*ii*) चने का पौधा कैसा है? 1

(*iii*) कवि खेत की मेड़ पर क्यों बैठा है? 1

(*iv*) चने को देख कवि क्या कल्पना करता है? 1

(*v*) 'एक बीते के बराबर' तथा 'छोटे गुलाबी फूल का, सज कर खड़ा है' में कौन-सा अलंकार है? 1

उत्तर

(*i*) **कवि का नाम**—केदार नाथ अग्रवाल।

कविता का नाम—चंद्र गहना से लौटती बेर।

(*ii*) चने का पौधा रंग में हरा, कद में ठिगना, एक बीते के बराबर तथा फूल युक्त है।

(*iii*) कवि चंद्र गहना से लौटकर खेत की मेड़ पर बैठा है ताकि सुंदर प्राकृतिक दृश्य को निहार सके।

(*iv*) चने को देखकर कवि कल्पना करता है कि चना सिर पर गुलाबी पगड़ी बाँधे विवाह स्थल पर जाने को तैयार खड़ा है।

(*v*) 'एकबीते के बराबर' में अनुप्रास अलंकार

'छोटे गुलाबी फूल का, सजकर खड़ा है' में मानवीकरण अलंकार।

लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) चंद्र गहना से लौटते कवि कहाँ रुका और क्यों? 2

(*ii*) चने का पौधा कवि को कैसा लग रहा है? 2

(*iii*) चने ने किसका मुरैठा बाँध रखा है? 1

उत्तर

(*i*) चंद्र गहना से वापस लौटते हुए कवि ने आसपास बिखरे प्राकृतिक सौंदर्य को देखा। वह अभिभूत हो उठा और खेत की मेड़ पर बैठकर प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने लगा। उसमें खो गया।

(*ii*) चने का पौधा आकार में छोटा होने से ठिगना दिख रहा है। यह एक बीते के बराबर झाड़ीदार है। यह रंग में हरा है। इस पौधे के ऊपरी भाग में फूल भी आए हैं, जिससे यह सुंदर दिख रहा है।

(*iii*) चने ने अपने सिर पर गुलाबी फूलों का मुरैठा बाँध रखा है, जिससे उसका सौंदर्य बढ़ गया है।

② *पास ही मिल कर उगी है*

बीच में अलसी हठीली

देह की पतली, कमर की है लचीली,

नील फूले फूल को सिर पर चढ़ा कर

कह रही है, जो छुए यह

दूँ हृदय का दान उसको। (पृष्ठ 119-120)

शब्दार्थ—**अलसी**—एक तिलहनी पौधा, तीसी। **हठीली**—जिद्दी। **लचीली**—लचकदार। **नील**—नीले।

भावार्थ—कवि देखता है कि चने के पास ही अलसी उग आई है। लगता है कि वह चने के पास हठ करके उगी है। पतला शरीर, लचकदार कमर वाली अलसी सिर पर नीले फूल धारण किए हुए है। ऐसी सुंदरी अलसी कहती है कि जो उसे छुएगा उसे वह अपना हृदय दान दे देगी। अर्थात् कवि उसको प्रेमातुर नायिका के रूप में प्रस्तुत कर रहा है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) अलसी कहाँ उगी हुई है? 1

(*ii*) अलसी का पौधा कैसा है? 1

(*iii*) वह अपने हृदय का दान किसे करना चाहती है? 1

(*iv*) अलसी के लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया गया है? 1

(*v*) 'नील फूले फूल' तथा 'दूँ हृदय का दान उसको' में कौन-सा अलंकार है? 1

उत्तर

(*i*) अलसी चने के पौधे के पास उससे सटकर उगी हुई है।

(*ii*) अलसी का पौधा पतला, कुछ लंबा तथा हवा के साथ लहराने वाला है।

(*iii*) वह अपने हृदय का दान उसे करेगी जो उसके सिर पर रखे फूलों को प्रेमपूर्वक स्पर्श करेगा।

(*iv*) अलसी के लिए हठीली, देह की पतली, कमर की लचीली आदि विशेषणों का प्रयोग किया गया है।

(*v*) 'नील फूले फूल' में अनुप्रास अलंकार तथा 'दूँ हृदय का दान उसको' में मानवीकरण अलंकार है।

लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) अलसी को हठीली क्यों कहा गया है? 2

(*ii*) अलसी के रूप-सौंदर्य का वर्णन करते हुए बताइए वह क्या कह रही है? 2

(*iii*) अलसी को किस रूप में चित्रित किया गया है? 1

उत्तर

(*i*) अलसी को हठीली इसलिए कहा गया है क्योंकि चने के साथ मिलकर उगने से ऐसा लगता है मानो वह वहाँ बलपूर्वक (जबरदस्ती) उग आई है। वह हवा के झोंके के साथ झुककर जमीन छू जाती है तो तुरंत ही पूर्ववत् खड़ी भी हो जाती है और चने के साथ झूमने लगती है।

(*ii*) अलसी का शरीर दुबला-पतला है। उसकी कमर लचीली है। उसके सिर पर सुंदर नीले फूल सुशोभित हैं। ऐसी सजी-धजी अलसी यह कह रही है कि जो इन फूलों को स्पर्श करेगा वह उसे अपना हृदय देगी।

(*iii*) अलसी को सुंदर, कमनीय तथा प्रेमातुर नायिका के रूप में चित्रित किया गया है।

③ *और सरसों की न पूछो—*

हो गई सबसे सयानी,

हाथ पीले कर लिए हैं

ब्याह-मंडप में पधारी

फाग गाता मास फागुन

आ गया है आज जैसे।

देखता हूँ मैं : स्वयंवर हो रहा है,

प्रकृति का अनुराग-अंचल हिल रहा है
इस विजन में,
दूर व्यापारिक नगर से
प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है। (पृष्ठ 120)

शब्दार्थ—सयानी—बड़ी, युवा, चतुर। **हाथ पीले कर**—विवाह के लिए हल्दी लगाकर। **पधारी**—आई हुई। **फाग**—फागुन माह में गाया जाने वाला गीत। **अनुराग**—प्रेम। **विजन**—सुनसान।

भावार्थ—सरसों के सौंदर्य के बारे में कवि कहता है, उसकी बात पूछो ही मत। वह सबसे सयानी युवा हो गई है। ब्याह के मंडप में जाने को आतुर उसने हाथों को पीला कर रखा है। ऐसे में लगता है कि फाग गाता हुआ फागुन भी आ पहुँचा है। यह सब देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी का स्वयंवर हो रहा है। इस शांतिपूर्ण क्षेत्र में प्रकृति का प्रेमपूर्ण आँचल हिल रहा है। सभी प्रसन्नचित्त दिखाई दे रहे हैं। कवि को लगता है शहरों की अपेक्षा गाँव की जमीन प्यार के मामले में अधिक उपजाऊ है। यहाँ मनुष्य तो मनुष्य, पेड़-पौधे भी प्यार करते हैं। यहाँ प्रकृति का एक-एक अंग प्यार से सराबोर दिख रहा है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) 'और सरसों की न पूछो'—कवि ऐसा क्यों कह रहा है? 1

(*ii*) सरसों को सयानी क्यों कहा गया है? 1

(*iii*) कवि ने फागुन का मानवीकरण किस प्रकार किया है? 1

(*iv*) 'दूर व्यापारिक नगर से' कहकर किस ओर संकेत किया गया है? 1

(*v*) 'ब्याह-मंडप में पधारी' में कौन सा अलंकार है? 1

उत्तर

(*i*) कवि ऐसा इसलिए कह रहा है क्योंकि अन्य फसलों से सरसों का सौंदर्य अधिक है। उसके पीले-पीले फूल उसके हाथ पीले होने की ओर संकेत कर रहे हैं।

(*ii*) सरसों को सयानी इसलिए कहा गया है क्योंकि सरसों की लंबाई बढ़ चुकी है। उस पर पीले फूल आ गए हैं, जिन्हें देख कर लगता है कि वह यौवनावस्था प्राप्त कर चुकी है।

(*iii*) कवि को लग रहा है कि फागुन का महीना फाग (फाल्गुन या वसंत ऋतु में गाए-जाने वाले गीत) गाता चला आ रहा है। इस तरह उसका मानवीकरण किया गया है।

(*iv*) दूर व्यापारिक नगर से कहकर कवि ने प्राकृतिक सुंदरता युक्त गाँव की ओर संकेत किया है।

(*v*) 'ब्याह-मंडल में पधारी' में मानवीकरण अलंकार है।

लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) कवि को स्वयंवर होने जैसा क्यों लग रहा है? 2

(*ii*) प्रकृति का अनुराग अंचल हिलने का क्या आशय है? 2

(*iii*) प्रेम की प्रिय भूमि किस प्रकार अधिक उपजाऊ है? 1

उत्तर

(*i*) कवि देखता है कि सरसों, अलसी, चना की फसलें अपनी सज-धज के साथ खड़ी हैं। चना अपने सिर पर मुरैठा बाँधे खड़ा है। हठीली अलसी सिर पर फूल धारण किए खड़ी है। सरसों भी अपने हाथ पीले किए दुल्हन रूप में पधारी है। उधर फागुन भी फाग गाता चला आ रहा है, जिसे देख लगता है कि स्वयंवर हो रहा है।

(*ii*) खेतों में हरी-भरी लहराती फसलें, वातावरण में फैली सुगंध, फागुन द्वारा गाए जा रहे फागों और हवा में हिलते-डुलते पत्तियों के पौधे देखकर ऐसा लगता है जैसे प्रकृति भी अपना अनुराग रूपी अंचल हिला रही है।

(*iii*) गाँव के वातावरण में चना, अलसी, सरसों जैसे पौधे भी प्रेम का आचार-व्यवहार करते दिखाई देते हैं, जिसे देखकर लगता है कि यह भूमि प्रेम के लिए अधिक उपजाऊ है।

④ *और पैरों के तले है एक पोखर,*
उठ रहीं इसमें लहरियाँ,
नील तल में जो उगी है घास भूरी
ले रही वह भी लहरियाँ।
एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा
आँख को है चकमकाता।
हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी,
प्यास जाने कब बुझेगी! (पृष्ठ 120)

शब्दार्थ–**पोखर**–तालाब। **लहरियाँ**–लहरें। **तल**–पेंदा। **चकमकाना**–चुँधियाना।

भावार्थ–कवि जिस स्थान पर बैठा है, वहीं पास में एक तालाब है, जिसमें हवा के चलने से लहरें उठ रही हैं। तालाब की नीली तली में भूरी घासें उग आई हैं। लहरों के साथ वे भी लहरा रही हैं। उस पानी में सूर्य की परछाई आँखों को चुँधियाँ रही है। वह चाँदी के बड़े गोल खंभे-सा दिख रही है। तालाब के किनारे कई पत्थर चुपचाप पानी पीते हुए दिख रहे हैं। कवि सोचता है कि, इन पत्थरों की प्यास पता नहीं कब बुझेगी, क्योंकि ये लंबे समय से पानी पी रहे हैं।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) तालाब कहाँ है? 1

(*ii*) भूरी घास कहाँ उगी हैं। 1

(*iii*) कवि की आँखें क्यों चौंधियाँ रही हैं? 1

(*iv*) तालाब के किनारे पत्थर क्या कर रहे हैं? 1

(*v*) काव्यांश में कौन-सी भाषा प्रयुक्त है? 1

उत्तर

(*i*) कवि जहाँ बैठा है, उसी के बिल्कुल पास में तालाब है।

(*ii*) भूरी घास तालाब की तली में उगी हैं।

(*iii*) सूर्य का प्रतिबिंब तालाब में गोलखंभे जैसा बन रहा है, जिसकी ओर देखने पर कवि की आँखें चुँधिया रही हैं।

(*iv*) तालाब के किनारे अनेक पत्थर पड़े हैं, जिन्हें देखकर लगता है कि पत्थर तालाब के किनारे चुपचाप पानी पी रहे हैं।

(*v*) काव्यांश में तत्सम शब्द युक्त देशज भाषा का प्रयोग है।

लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) काव्यांश के आधार पर तालाब का वर्णन कीजिए। 2

(*ii*) पोखर किनारे पत्थरों को देख कवि क्या कल्पना करता है? 2

(*iii*) तालाब की भूरी घास में लहरियाँ उठने का क्या कारण है? 1

उत्तर

(*i*) कवि जहाँ बैठा है वहीं पास में एक तालाब है, जिसका पानी स्वच्छ है। उसमें लहरें उठ रही हैं। इसकी तली में घास उगी है तथा इसके पानी में सूर्य का प्रतिबिंब बन रहा है, जो चाँदी के खंभे का आभास कराता है।

(*ii*) पोखर के किनारे कुछ पत्थर पड़े हैं जिनका एक भाग तालाब के पानी को छू रहा है। इस पानी और पत्थरों को देखकर कवि कल्पना कर रहा है कि पत्थर पानी पिये जा रहे हैं। पता नहीं इनकी प्यास कब बुझेगी।

(*iii*) हवा चलने के कारण तालाब का पानी लहरा रहा है। इसी पानी के लहराने के कारण तालाब की तली में उगी भूरी घास में भी लहरियाँ उठ रही हैं।

⑤ *चुप खड़ा बगुला डुबाए टाँग जल में,*
देखते ही मीन चंचल
ध्यान-निद्रा त्यागता है,
चट दबा कर चोंच में
नीचे गले के डालता है!
एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फौरन
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबा कर
दूर उड़ती है गगन में! (पृष्ठ 120-121)

शब्दार्थ—**मीन**—मछली। **ध्यान-निद्रा**—ध्यान रूपी नींद। **त्यागना**—छोड़ना। **चट**—जल्दी से। **माथ**—माथा, मस्तक। **श्वेत**—उज्ज्वल। **जल के हृदय पर**—पानी की सतह पर। **उजली**—चमकती हुई, सफेद। **चटुल**—चंचल। **गगन**—आसमान।

भावार्थ—तालाब में एक किनारे बगुला ध्यान की नींद में मग्न है। इसका ध्यान दिखावटी है क्योंकि वह चंचल मछलियों को देखते ही अपना ध्यान त्याग देता है। उस मछली को वह चोंच में पकड़कर गले के नीचे उतार लेता है। तभी कवि देखता है कि काले माथे वाली एक चतुर चिड़िया, जिसके पंख सफेद हैं, पानी की सतह पर झपट्टा मारती है और अपनी पीली चोंच में एक चमकदार चंचल मछली दबाकर आकाश में उड़ जाती है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) बगुला ध्यान निंद्रा कब त्यागता है? 1

(*ii*) काले माथे वाली चिड़िया को चतुर क्यों कहा गया है? 1

(*iii*) चिड़िया आकाश में कब उड़ जाती है? 1

(*iv*) चिड़िया और बगुला किसके प्रतीक हैं? 1

(*v*) काव्यांश की भाषागत विशेषता लिखिए। 1

उत्तर

(*i*) तालाब में ध्यान लगाए खड़ा बगुला जैसे ही मछली को देखता है, वह अपनी ध्यान-निंद्रा त्याग उसका शिकार कर लेता है।

(*ii*) काले माथे वाली चिड़िया जल में झपट्टा मारकर चतुराई से अपने शिकार को पकड़ लेती है, इसलिए उसे चतुर कहा गया है।

(*iii*) चिड़िया को जब उसका शिकार मिल जाता है, तब वह आकाश में उड़ जाती है।

(*iv*) चिड़िया और बगुला कमजोरों का शोषण करने वाले शोषक वर्ग के प्रतीक हैं।

(*v*) काव्यांश में देशज शब्द से युक्त सरल, सहज तथा मुहावरेदार भाषा का प्रयोग है।

लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) बगुला तालाब में किस तरह खड़ा है और क्यों? 2

(*ii*) काव्यांश के आधार पर चिड़ियाँ की विशेषता लिखिए। 2

(*iii*) चिड़िया कहाँ टूट पड़ती है और क्यों? 1

उत्तर

(*i*) बगुला तालाब में ध्यान लगाकर योगी की तरह खड़ा है। बगुले को मछलियों का इंतजार है। जैसे ही कोई मछली उसके निकट आती है, वह अपनी ध्यान रूपी निद्रा को त्यागकर उस मछली को दबोच लेता है और गले के नीचे उतार जाता है।

(*ii*) शिकार करने वाली चिड़िया का माथा काला है। उसके पंख सफेद तथा चोंच पीली है। यह चिड़िया अत्यंत चतुराई से अपने शिकार (मछली) पर झपट्टा मारती है और उसे चोंच में दबाए आकाश में उड़ जाती है।

(*iii*) पानी से कुछ ऊँचाई पर उड़ती चिड़िया मछली देखते ही पानी में ही मछली पर टूट पड़ती है, क्योंकि उसे अपनी भूख शांत करनी है।

⑥

औ' यहीं से–
भूमि ऊँची है जहाँ से-
रेल की पटरी गई है।
ट्रेन की टाइम नहीं है।
मैं यहाँ स्वच्छंद हूँ,
जाना नहीं है। (पृष्ठ 121)

शब्दार्थ–स्वच्छंद–आज़ाद, मुक्त।

भावार्थ–कवि जहाँ बैठा यह प्राकृतिक दृश्य देख रहा है, वहाँ से कुछ दूरी पर जमीन ऊँची है। वहीं सामने से रेल की पटरी गई है। कवि जानता है कि यह ट्रेन (रेलगाड़ी) के आने-जाने का समय नहीं है। वैसे भी कवि को किसी काम के लिए कहीं आना जाना नहीं है। वह इस समय स्वतंत्र है। अर्थात् उसे कोई विशेष काम नहीं है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) 'औ यहीं' का क्या आशय है? 1

(*ii*) रेल की पटरी कहाँ है? 1

(*iii*) कवि स्वयं को कैसा महसूस करता है? 1

(*iv*) काव्यांश में आए ऑगत शब्दों को छाँटकर लिखिए। 1

(*v*) काव्यांश रचना किस छंद में है? 1

उत्तर

(*i*) 'औ यहीं' का आशय जहाँ कवि बैठा है तथा उसके आसपास की जगह से है।

(*ii*) रेल की पटरी उस जगह पर है जहाँ की जमीन ऊँची है। यह कवि के सामने थोड़ी ही दूर पर है।

(*iii*) कवि स्वयं को स्वच्छंद महसूस कर रहा है, क्योंकि उस समय उसे कहीं भी नहीं जाना है, और न उसे कोई जरूरी काम करना है।

(*iv*) आगत (विदेशी) शब्द–रेल, ट्रेन और टाइम।

(*v*) काव्यांश रचना में मुक्त छंद है।

लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) रेल की पटरी कहाँ से गई हैं?

(*ii*) कवि किस मनोदशा में वहाँ बैठा है?

(*iii*) 'ट्रेन का टाइम नहीं है' का क्या आशय है?

उत्तर

(*i*) कवि खेतों के बीच प्राकृतिक सौंदर्य निहार रहा है। उसके सामने ही कुछ दूरी पर जमीन कुछ ऊँची है। उसी ऊँची जमीन पर रेल की पटरी है, जो कवि को दिखाई दे रही है।

(*ii*) कवि वहाँ बैठा प्राकृतिक सौंदर्य को निहार रहा है। वह वहाँ फुर्सत से बैठा है। उसे कहीं नहीं जाना है। वह पूरी तरह से स्वच्छंद है।

(*iii*) आशय यह है कि उस पटरी से अभी कुछ समय तक किसी ट्रेन को नहीं आना-जाना है। अभी किसी ट्रेन के आने का समय नहीं है।

⑦ *चित्रकूट की अनगढ़ चौड़ी*
कम ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ
दूर दिशाओं तक फैली हैं।
बाँझ भूमि पर
इधर-उधर रींवा के पेड़
काँटेदार कुरूप खड़े हैं। (पृष्ठ 121)

शब्दार्थ—**अनगढ़**—ऊबड़-खाबड़। **बाँझ**—बंध्या, अनुर्वर। **रींवा**—एक कँटीला पेड़। **कुरूप**—भद्दे।

भावार्थ—कवि देखता है कि उसके सामने चित्रकूट की टेढ़ी-मेढ़ी, ऊबड़-खाबड़, कम ऊँचाई वाली पहाड़ियाँ दूर-दूर तक फैली हैं। इन पहाड़ियों की भूमि अनुर्वर है। वहाँ रींवा के काँटेदार, कुरूप पेड़ खड़े हैं, इन पेड़ों में कोई आकर्षण नहीं है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) 'अनगढ़' शब्द का आशय स्पष्ट कीजिए। 1

(*ii*) दूर दिशाओं तक फैली हैं—का भाव क्या है? 1

(*iii*) रींवा के पेड़ कहाँ खड़े हैं? 1

(*iv*) पहाड़ियों के लिए प्रयुक्त विशेषण छाँटकर लिखिए। 1

(*v*) 'काँटेदार कुरूप खड़े हैं'—में कौन-सा अलंकार है? 1

उत्तर

(*i*) 'अनगढ़' का आशय है बेडौल, ऊबड़-खाबड़ तथा ऊँची-नीची।

(*ii*) भाव यह है कि ये पहाड़ियाँ थोड़ी जगह में सीमित न होकर बहुत दूर-दूर तक फैली हैं।

(*iii*) रींवा के पेड़ दूर-दूर तक फैली पहाड़ियों के पास बंजर भूमि पर उगे हैं।

(*iv*) पहाड़ियों के लिए प्रयुक्त विशेषण—'अनगढ़', 'चौड़ी', 'कम ऊँची' तथा 'दूर दिशाओं तक फैली' हैं।

(*v*) अनुप्रास अलंकार।

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. चित्रकूट की पहाड़ियों की विशेषता लिखिए। 1
2. काव्यांश के आधार पर पहाड़ियों के आसपास की जमीन कैसी है? 2
3. चित्रकूट की पहाड़ियों पर उगे पेड़ों का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए। 2

उत्तर

1. चित्रकूट की पहाड़ियाँ ऊँची-नीची, ऊबड़-खाबड़ तथा दूर-दूर तक फैली हैं।
2. चित्रकूट की पहाड़ियों के आसपास की जमीन पथरीली तथा अनुर्वर हैं। इसमें कँटीली झाड़ियाँ, छोटे-छोटे पेड़ों के अलावा कुछ नहीं उगता है। इस जमीन को बाँझ भूमि भी कहा जाता है।

3. चित्रकूट की पहाड़ियों की पथरीली जमीन पर रींवा के पेड़ उगे हैं। इन पेड़ों की पत्तियाँ छोटी-छोटी तथा इनमें काँटे अधिक हैं। पत्तियाँ कम होने से इनमें हरियाली का अभाव है। इसमें छाया भी कम रहती है। देखने में ये पेड़ बड़े कुरूप लगते हैं।

8

सुन पड़ता है
मीठा-मीठा रस टपकाता
सुग्गे का स्वर
टें टें टें टें;
सुन पड़ता है
वनस्थली का हृदय चीरता,
उठता-गिरता,
सारस का स्वर
टिरटों टिरटों;
मन होता है–
उड़ जाऊँ मैं
पर फैलाए सारस के संग
जहाँ जुगुल जोड़ी रहती है
हरे खेत में,
सच्ची प्रेम-कहानी सुन लूँ
चुप्पे-चुप्पे। (पृष्ठ 121-122)

शब्दार्थ–**सुग्गा**–तोता। **वनस्थली**–वन प्रांत, जंगल का क्षेत्र। **हृदय चीरता**–दूर तक आवाज़ गुँजाता। **जुगुल**–युगल जोड़ा। **चुप्पे-चुप्पे**–चुपचाप, छिपकर।

भावार्थ–कवि को तोते की टें-टें आवाज सुनाई देती है। तोते की यह आवाज उसके मन को बहुत भा रही है। यह आवाज उसे कर्णप्रिय लग रही है। उसे दूसरी ओर से सारस की टिरटों-टिरटों की आवाज सुनाई देती है। यह आवाज कहीं दूर से वन प्रांत को चीरती आ रही है। सारस का यह स्वर कभी तेज होता है तो कभी मंद हो जाता है। कवि उस आवाज को सुनकर प्रेमातुर हो जाता है। उसका मन करता है कि वह सारस के साथ उड़कर वहाँ पहुँच जाए, जहाँ हरे-भरे खेतों के बीच यह युगल जोड़ी रहती है और परस्पर प्रेम की बातें कर रही है। कवि चुपचाप तथा छिपकर उनकी प्रेम कहानी को सुनना चाहता है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) कवि को तोते का स्वर कैसा लगता है? 1

(*ii*) वनस्थली का हृदय चीरता–का आशय क्या है? 1

(*iii*) कवि क्या करना चाहता है? 1

(*iv*) सारस युगल कहाँ रहते हैं? 1

(*v*) काव्यांश की भाषागत विशेषता लिखिए। 1

उत्तर

(*i*) कवि को तोते का स्वर कर्णप्रिय लगता है।

(*ii*) आशय है कि तोते का स्वर जंगल भर में गूँज रहा है।

(*iii*) कवि सारस युगल के साथ उड़कर जाना चाहता है।

(*iv*) सारस की जोड़ी हरे-भरे खेतों के बीच रहती है।

(*v*) काव्यांश में आम बोल-चाल के शब्दों का प्रयोग है, जिसमें सरलता एवं मधुरता है।

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. कवि को किसका स्वर सुनाई देता है? वह स्वर कैसा है? 1
2. सारस के सुर की क्या विशेषता है? उसे सुनकर कवि की क्या इच्छा होती है? 2
3. कवि किसकी प्रेम कहानी सुनना चाहता है और कैसे? 2

उत्तर

1. कवि के तोते (सुग्गे) का स्वर–टें टें टें सुनाई देता है। यह स्वर उसे कर्णप्रिय लगता है।
2. सारस का टिरटों-टिरटों का स्वर जंगल को चीरता हुआ कहीं दूर से आता प्रतीत होता है। इसे सुनकर कवि की इच्छा होती है कि वह उड़कर वहाँ चला जाए जहाँ हरे-भरे खेतों में सारस की जोड़ी रहती है। उसका मन भी पक्षियों की तरह उड़ान भरना चाहता है।
3. कवि हरे-भरे खेतों में रहने वाले सारस की प्यार भरी बातें चुपके-चुपके सुनना चाहता है, जिससे कि उसके कदमों की आहट सुनकर सारस युगल मौन न हो जाएँ तथा ऐसा करते हुए कोई देखे भी नहीं क्योंकि कोलाहल सुनकर सारस उड़ जाएँगे।

प्रश्न–अभ्यास

(पाठ्यपुस्तक से)

1. 'इस विजन में ''''''''''''' अधिक है'–पंक्तियों में नगरीय संस्कृति के प्रति कवि का क्या आक्रोश है और क्यों?

उत्तर उपर्युक्त पंक्तियों में कवि का आक्रोश प्रकट हुआ है, क्योंकि शहर या नगर में रहने वाले लोगों में पैसों के प्रति इतना लगाव बढ़ गया है कि इसके आगे उन्हें सब कुछ तुच्छ-सा लगता है। वे अपने व्यापार पर अधिक ध्यान देते हैं। वे प्रेम और सौंदर्य से बहुत दूर हो चुके हैं। कवि के आक्रोश का कारण यह है कि–

(*i*) कवि प्रकृति को बहुत प्यार करता है।

(*ii*) वह शहर के बनावटी जीवन को अच्छा नहीं मानता है।

(*iii*) गाँवों का वातावरण शहर के शोर, प्रदूषण, भागमभाग की जिंदगी से कोसों दूर है।

(*iv*) गाँवों में प्रकृति के अंग-अंग प्यार में डूबे नजर आते हैं।

2. सरसों को 'सयानी' कहकर कवि क्या कहना चाहता होगा?

उत्तर कवि देखता है कि खेत में चना, अलसी आदि छोटे हैं वही सरसों उनकी तुलना में बढ़कर लंबी और बड़ी हो गई है। उसमें पीले फूल भी नजर आ रहे हैं। यह देख कवि सरसों को सयानी कहना चाहता है। वह अन्य फसलों से बढ़कर हाथ पीले कर विवाह मंडप में जाने को तैयार है।

3. अलसी के मनोभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर कवि ने अलसी को हठीली नायिका के रूप में चित्रित किया है। वह चने के पास हठपूर्वक उग आयी है। दुबले शरीर और लचकदार कमरवाली अलसी सिर पर नीले फूल धारण कर प्रेमातुर हो रही है कि उसे जो छुएगा उसका वह अपने हृदय का दान देगी।

4. अलसी के लिए 'हठीली' विशेषण का प्रयोग क्यों किया गया है?

उत्तर अलसी के लिए हठीली विशेषण का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि–

(*i*) किसान ने उसे चने से अलग कतार में बोया होगा, पर वह हठपूर्वक चने के पास उग आई है।

(*ii*) दुबले शरीर वाली अलसी बार-बार हवा के झोंके से झुक जाती है और उठकर खड़ी हो जाती है और फिर चने के बीच नजर आने लगती है।

(*iii*) उसकी हठ है कि उसके सिर पर सजे नीले फूलों को छूने वाले को ही अपना दिल दे देगी।

5. 'चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा' में कवि की किस सूक्ष्म कल्पना का आभास मिलता है?

उत्तर पोखर के जल में जब सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं तो उसका प्रतिबिंब गोल और लंबा-सा बन जाता है। यह प्रतिबिंब कवि को चाँदी के खंभे सा लगता है। इस प्रकार कवि की यह कल्पना मनोरम बन पड़ी है।

6. कविता के आधार पर 'हरे चने' का सौंदर्य अपने शब्दों में चित्रित कीजिए।

उत्तर हरे चने का पौधा आकार में छोटा है। वह अपने सिर पर गुलाबी रंग की पगड़ी बाँधे खड़ा है। उसे देखकर लगता है कि वह दूल्हे के रूप में सजकर खड़ा है।

7. कवि ने प्रकृति का मानवीकरण कहाँ-कहाँ किया है?

उत्तर कवि ने कविता में अनेक स्थलों पर प्रकृति का मानवीकरण किया है; जैसे–

(*i*) यह हरा ठिगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर

(*ii*) बीच में अलसी हठीली
देह की पतली, कमर की है लचीली

(*iii*) सरसों के लिए–हाथ पीले कर लिए हैं
ब्याह-मंडप में पधारी

(*iv*) फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे।

(*v*) हैं कई पत्थर किनारे पी रहे चुपचाप पानी

(*vi*) बगुले के लिए–देखते ही मीन चंचल
ध्यान-निद्रा त्यागता है,

8. कविता से उन पंक्तियों को ढूँढ़िए जिनमें निम्नलिखित भाव व्यंजित हो रहा है–
और चारों तरफ़ सूखी और उजाड़ ज़मीन है लेकिन वहाँ भी तोते का मधुर स्वर मन को स्पंदित कर रहा है।

उत्तर
चित्रकूट की अनगढ़ चौड़ी
कम ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ
दूर दिशाओं तक फैली हैं।
बाँझ भूमि पर
इधर-उधर रींवा के पेड़
काँटेदार कुरूप खड़े हैं।
सुन पड़ता है
मीठा-मीठा रस टपकाता
सुग्गे का स्वर
टें टें टें टें;

रचना और अभिव्यक्ति

9. 'और सरसों की न पूछो'–इस उक्ति में बात को कहने का एक खास अंदाज़ है। हम इस प्रकार की शैली का प्रयोग कब और क्यों करते हैं?

उत्तर अपनी बात को चुटिल (रोचक) बनाते हुए अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से कहने, किसी की प्रशंसा आदि के लिए इस शैली का प्रयोग करते हैं; जैसे–

तुम कुतुबमीनार की ऊँचाई की न पूछो।
तुम गंगा की पवित्रता को तो पूछो ही मत।
इस समय लेह में ठंडक की न पूछो।

10. काले माथे और सफेद पंखों वाली चिड़िया आपकी दृष्टि में किस प्रकार के व्यक्तित्व का प्रतीक हो सकती है?

उत्तर काले माथे और सफेद पंखों वाली चिड़िया किसी सफेदपोश व्यक्तित्व का प्रतीक हो सकती है। इसी चिड़िया की तरह ही वह भी अपने शिकार पर नज़र रखता है। वह परोपकार, समाजसेवा आदि का दावा करता फिरता है परंतु अवसर मिलते ही अपना काम कर जाता है।

भाषा अध्ययन

11. बीते के बराबर, ठिगना, मुरैठा आदि सामान्य बोलचाल के शब्द हैं, लेकिन कविता में इन्हीं से सौंदर्य उभरा है और कविता सहज बन पड़ी है। कविता में आए ऐसे ही अन्य शब्दों की सूची बनाइए।

उत्तर फाग, पोखर, लचीली, हठीली, सयानी, चकमकाता, चट, झपाटे, चटुल, लहरियाँ, अनगढ़, सुग्गा, जुगल, जोड़ी, टें-टें-टें, टिरटों-टिरटों, चुप्पे-चुप्पे आदि।

12. कविता को पढ़ते समय कुछ मुहावरे मानसपटल पर उभर आते हैं, उन्हें लिखिए और अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए।

उत्तर कविता में आए कुछ मुहावरे निम्नलिखित हैं–

(*i*)	**बीता भर**	जरा-सा, छोटा-सा	–	बीता-भर का दिखने वाला यह साँप बहुत ही जहरीला है।
(*ii*)	**सिर चढ़ाना**	बढ़ावा देना	–	प्यार में संतान को इतना मत सिर पर चढ़ाओ कि वह एक दिन परिवार के लिए मुसीबत बन जाए।
(*iii*)	**हृदय का दान देना**	समर्पित होना	–	सुमन तो कब से हृदय का दान दे चुकी थी।
(*iv*)	**हाथ पीले करना**	विवाह करना	–	दहेज-प्रथा ने गरीब माँ-बाप की चिंता बढ़ा दी है कि वह अपनी बेटियों का हाथ कैसे पीला करें।
(*v*)	**गले में डालना**	जल्दी से खाना	–	ठेकेदार को आता देख मज़दूर ने जल्दी से रोटियाँ गले में डालीं और काम पर लग गया।
(*vi*)	**हृदय चीरना**	दुख पहुँचाना	–	कठोर बातें हृदय चीर देती हैं।
(*vii*)	**प्यास बुझाना**	तृप्त होना	–	कुएँ के शीतल जल ने हम दोनों की प्यास बुझा दी।
(*viii*)	**झपाटे मारना**	अचानक टूट पड़ना	–	बाज ने झपाटे मारकर चिड़िया के बच्चे को दबोचा और उड़ गया।

कुछ और प्रश्न

I. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि चंद्र गहना से लौटते समय कहाँ रुक गया था और क्यों?

उत्तर कवि चंद्र गहना से लौटते समय खेत की मेड़ पर रुक गया। कवि जहाँ रुका था, वहाँ चारों ओर प्राकृतिक सौंदर्य बिखरा पड़ा था। प्रकृति प्रेमी कवि उस सौंदर्य को देखकर आगे न बढ़ सका और प्रकृति के एक-एक अंग का सौंदर्य निरखने लगा।

2. प्राकृतिक दृश्यों को देखने में लीन कवि को ऐसा क्यों लगता है जैसे स्वयंवर हो रहा है?

उत्तर प्राकृतिक दृश्यों को देखने में लीन कवि को ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि चना सिर पर गुलाबी पगड़ी बाँधे सज-धजकर खड़ा है और सरसों भी हाथ पीले किए साथ में खड़ी है। ऐसे में फागुन भी फाग गाता हुआ आ खड़ा हुआ। दूल्हे के रूप में चने को और दुल्हन के रूप में सरसों को देखकर कवि को लगता है कि स्वयंवर हो रहा है।

3. प्रकृति अपनी प्रसन्नता किस प्रकार व्यक्त कर रही है?

उत्तर दूल्हे के रूप में चने और पीले हाथों वाली सजी-धजी सरसों को देखकर लगता है कि प्रकृति का एक भाग ब्याह-मंडप बन गया है। फागुन द्वारा गायन किया जा रहा है। सुगंधित समीर चलने से अन्य पेड़-पौधे हिल-डुल रहे हैं। यह देखकर ऐसा लगता है कि प्रकृति अपना आँचल हिलाकर खुशी प्रकट कर रही है।

4. 'प्यास जाने कब बुझेगी' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर कवि देखता है कि तालाब के किनारे अनेक पत्थर पड़े हैं। ऐसा लगता है कि वे चुपचाप पानी पिए जा रहे हैं। ऐसा वे पता नहीं, कब से कर रहे हैं और अब भी पानी पी रहे हैं। इस पर भी उनकी प्यास समाप्त होने वाली नहीं प्रतीत हो रही है।

5. 'चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता के आधार पर तालाब के सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर कवि जिस स्थान पर बैठा प्राकृतिक सौंदर्य निहार रहा था वहीं एक तालाब था, जिसके किनारे पर पत्थर पड़े थे। तालाब की तली में भूरी घास उगी है जो पानी की लहरों के साथ लहरा रही है। इस पानी में सूर्य का प्रतिबिंब आँखों को चुँधिया रहा है। तालाब में एक बगुला ध्यानमग्न खड़ा है जो मछलियों को देखते ही उनको पकड़कर खा जाता है।

6. तालाब की चिड़िया कैसी थी? वह अपना शिकार कैसे करती थी?

उत्तर तालाब की चिड़िया का माथा काला था। वह चतुर थी, जिसके पंख सफेद तथा चोंच पीली थी। जैसे ही वह पानी की सतह पर कोई मछली देखती थी, उस पर झपट्टा मार देती थी। वह उसे अपनी पीली चोंच में दबाकर आकाश में उड़ जाती थी।

7. सारस की आवाज सुनकर कवि क्या करने के लिए बेचैन हो उठता है?

उत्तर खेत की मेड़ पर बैठा कवि दूर से आती सारस की आवाज सुनता है। सारस की टिरटों-टिरटों की आवाज सुन उसके मन में इच्छा होती है कि हरे-भरे खेतों में रहने वाली सारस की जोड़ी के पास उड़कर चला जाए और उनकी प्रेम-कहानी चुपचाप सुन ले।

II. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कविता के आधार पर चित्रकूट की पहाड़ियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर चंद्र गहना से लौटते समय कवि प्राकृतिक सौंदर्य देखने में मग्न है। वह देखता है कि उसके सामने ही चित्रकूट की पहाड़ियाँ हैं जो दूर तक फैलीं, ऊबड़-खाबड़ तथा बेडौल हैं। इनकी ऊँचाई एक सी नहीं है। पहाड़ी की पथरीली जमीन उर्वर नहीं है। इन पर कँटीले जंगली पेड़ ही उगते हैं। पहाड़ी पर रीवाँ के काँटेदार पेड़ हैं जो देखने में बहुत कुरूप हैं। पहाड़ी की इस जमीन को बाँझ भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ इन छोटे काँटेदार कुरूप पौधों के अलावा कोई और पेड़ नहीं उगता है।

2. 'दूर व्यापारिक नगर से, प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है' इस बारे में आप क्या सोचते हैं?

उत्तर 'दूर व्यापारिक नगर से, प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है'—इस बारे में मैं सोचता हूँ कि शहरों में लोगों को काम से फुर्सत नहीं है। वे अपनी भागमभाग की जिंदगी से परेशान रहते हैं। वे एक-दूसरे के सुख-दुख में कम समय दे पाते हैं। वहाँ लोगों के प्रेम में वास्तविकता की गहराई कम, दिखावटीपन अधिक होता है। वहाँ केवल युवक-युवतियों के प्यार की बातें सुनी जाती हैं, परंतु गाँव के खेत-खलिहान, बाग बगीचे, पेड़-पौधे तक में प्यार रचा-बसा है। यहाँ मनुष्यों के अलावा पशु-पक्षी, चना, सरसों, अलसी जैसे पौधे भी प्यार में डूबे दिखते हैं। धान के हरे-हरे खेतों में सारस अपनी प्रेम-कहानी कहते नजर आते हैं।

3. बगुले के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? इससे हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर कवि देखता है कि तालाब में बगुला ध्यानमग्न अवस्था में खड़ा है। जैसे ही यह किसी मछली को देखता है यह अपना ध्यान भंगकर उसको पकड़कर खा जाता है। इसी प्रकार हमारे समाज में भी कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो बाह्य तथा दिखावटीपन में तो बड़े पवित्र, नेक तथा समाज सुधार के उद्देश्यपूर्ण कार्य में लगे दिखाई देते हैं, किंतु वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत होती है। ये लोग इन नेक कार्यों की आड़ में कमजोर और निर्दोष लोगों को अपना शिकार बनाने में नहीं चूकते हैं।

इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए।